ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

11 January 2025

सॉपस्टोन (Soapstone) के अनियंत्रित खनन पर उच्च न्यायालय की टिप्पणी

संदर्भ: हाल ही में उत्तराखंड के बागेश्वर जिले में सॉपस्टोन का खनन एक प्रमुख मुद्दा बन गया है, जिसके सन्दर्भ में उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने अनियंत्रित खनन गतिविधियों के लिए शीर्ष अधिकारियों को फटकार लगाई है।

विषय के बारे में:

- मुद्दा बागेश्वर जिले के कांडा तहसील के गांवों में सॉपस्टोन की व्यापक और अनियंत्रित खनन के इर्द-गिर्द केंद्रित है। क्षेत्र में अनियंत्रित खनन को रोकने के लिए, उच्च न्यायालय ने एक आयोग नियुक्त किया था ताकि क्षेत्र में अनियंत्रित खनन के कारणों और स्थानीय आबादी और पारिस्थितिकी पर इसके प्रभावों का पता लगाया जा सके।
- उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त आयुक्तों ने 6 जनवरी, 2025 को एक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें क्षेत्र में अनियंत्रित खनन के पर्यावरणीय और सांस्कृतिक प्रभावों के बारे में चौंकाने वाले निष्कर्ष सामने आए। रिपोर्ट में स्थानीय अधिकारियों की अनियंत्रित खनन को सुविधाजनक बनाने में संलिप्तता को भी उजागर किया गया। इसमें बताया गया है कि अर्ध-यंत्रीकृत खनन के लिए परिभाषाएं स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं हैं, फिर भी भारी मशीनरी का उपयोग करने वाले खनन कार्यों को पर्यावरणीय मंजूरी दी जा रही है।

पर्यावरणीय और सामाजिक चिंताएं:

- **पर्यावरणीय चिंताएं:** अनियंत्रित खनन गतिविधियों के परिणामस्वरूप भू-धंसाव हुआ है, जहां सॉपस्टोन के निष्कर्षण के कारण उत्पन्न अस्थिरता के कारण जमीन धंस रही है। विशेष रूप से दोमट मिट्टी वाले क्षेत्रों में मिट्टी का कटाव और ढीलापन बढ़ गया है, जिससे मानसून के मौसम में भूस्खलन का खतरा काफी बढ़ गया है। खदानों के आसपास हरित पट्टियों, बफर जोन और सुरक्षात्मक संरचनाओं की कमी ने मिट्टी के कटाव और अस्थिरता को बढ़ा दिया है।
- **सामाजिक चिंताएं:** खनन गतिविधियां स्थानीय समुदायों के दैनिक जीवन को प्रभावित कर रही हैं। पारंपरिक कुमाऊंनी बखली घर, जोकि कभी भूकंपीय गतिविधियों के प्रति लचीले थे, अब जमीन में बदलाव के कारण संरचनात्मक क्षति का सामना कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, जल की कमी और प्रदूषण को खनन कार्यों से बढ़ावा मिला है, जिससे स्थानीय आबादी के जीवन की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। भूमि धंसाव ने महत्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थलों, जैसे कि कालिका मंदिर, जिसे जमीन के अस्थिर होने के कारण फर्श में दरारें पड़ गई हैं, को भी खतरा पैदा किया है।

सॉपस्टोन के बारे में:

- सॉपस्टोन एक नरम, रूपांतरित चट्टान है जिसमें मुख्य रूप से टैल्क होता है, और इसका व्यापक रूप से निर्माण, डिजाइन और कला के लिए उपयोग किया जाता है। भारत में, सॉपस्टोन भंडार राजस्थान और उत्तराखंड में केंद्रित हैं।
- सॉपस्टोन का उपयोग काउंटरटॉप्स, मूर्तियां, सिंक बनाने में किया जाता है और इसकी नरम और गर्मी प्रतिरोधी प्रकृति के कारण सौंदर्य प्रसाधन और फार्मास्युटिकल्स जैसे विभिन्न उद्योगों में एक महत्वपूर्ण खनिज है।

सॉपस्टोन के उपयोग:

सॉपस्टोन के विभिन्न क्षेत्रों में कई उपयोग हैं:

- **निर्माण और डिजाइन:** सॉपस्टोन का उपयोग अक्सर काउंटरटॉप्स, सिंक और चूल्हों के लिए किया जाता है क्योंकि इसकी बनावट चिकनी होती है और यह गर्मी का प्रतिरोध करता है।
- **कला और मूर्तियां:** सॉपस्टोन की नरम और आसानी से तराशने योग्य प्रकृति इसे मूर्तियों के लिए एक लोकप्रिय सामग्री बनाती है।
- **औद्योगिक उपयोग:** सॉपस्टोन से प्राप्त टैल्क का उपयोग सौंदर्य प्रसाधन, फार्मास्युटिकल्स और रबर और पेंट के उत्पादन में किया जाता है।

अमेरिका में शीतकालीन तूफान

संदर्भ: हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका में आए शीतकालीन तूफान ने कम से कम पांच लोगों की जान ले ली है। इस तूफान के कारण बड़े पैमाने पर स्कूल बंद हुए, सड़कें अवरुद्ध हो गई और बिजली आपूर्ति बाधित हुई। यह चरम मौसमी घटना मुख्यत: ध्रुवीय भंवर के विस्तार के कारण हुई है। ध्रुवीय भंवर एक शक्तिशाली ठंडी हवा का क्षेत्र है जिसने अमेरिका के बड़े हिस्से में तापमान में भारी गिरावट का कारण बना है।

ध्रुवीय भंवर क्या है?

- ध्रुवीय भंवर कम दबाव और ठंडी हवा का एक विशाल क्षेत्र है जोकि सामान्यतौर पर पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्रों पर बना रहता है, जोकि उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के चारों ओर एक चक्र की तरह घूमता है। ध्रुवीय भंवर दो प्रकार के होते हैं:
  - » **क्षोभमंडलीय ध्रुवीय भंवर:** यह वायुमंडल की सबसे निचली परत (पृथ्वी की सतह से लगभग 10 से 15 किलोमीटर ऊपर) पर होता है, जहाँ अधिकांश मौसमी घटनाएँ होती हैं।
  - » **समतापमंडलीय ध्रुवीय भंवर:** पृथ्वी से लगभग 15 से 50 किलोमीटर ऊपर स्थित, यह भंवर शरद ऋतु के दौरान सबसे शक्तिशाली होता है और गर्मियों में गायब हो जाता है।
- ध्रुवीय भंवर पृथ्वी के वायुमंडल की एक प्राकृतिक विशेषता है, जब यह कमजोर हो जाता है या अपनी सामान्य स्थिति से हट जाता है, तो इसका वैश्विक मौसम पैटर्न पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है, विशेष

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

रूप से यू.एस., यूरोप के कुछ हिस्सों और एशिया में।

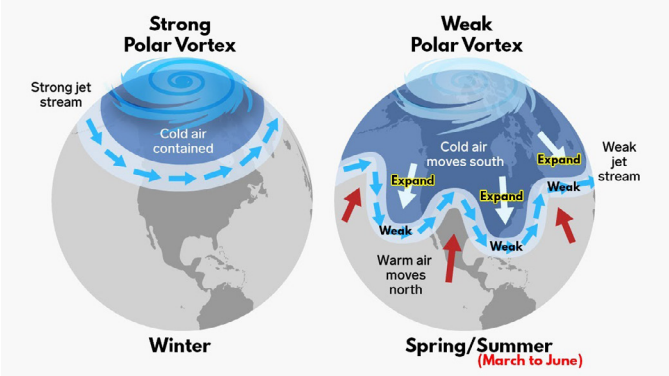

ध्रुवीय भंवर कब अत्यधिक ठंड का कारण बनता है?

- ध्रुवीय भंवर आमतौर पर ध्रुवों के पास ठंडी हवा को सीमित रखता है। लेकिन जब यह कमजोर पड़ता है, तो ठंडी आर्कटिक हवा दक्षिण की ओर बढ़ जाती है, जिससे तापमान में गिरावट होती है और अत्यधिक सर्दी की स्थिति पैदा हो सकती है। यह दक्षिणी क्षेत्रों, जैसे फ्लोरिडा को भी प्रभावित कर सकता है।
- सामान्यत:, जेट स्ट्रीम ध्रुवीय भंवर को स्थिर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक तेज गति वाली हवा का बैंड है जो ध्रुवों के पास ठंडी हवा को सीमित रखता है। लेकिन जब ध्रुवीय भंवर कमजोर होता है, तो जेट स्ट्रीम अस्थिर हो जाती है और लहरदार हो जाती है। इससे उच्च दबाव प्रणालियाँ ठंडी हवा को दक्षिण की ओर धकेलती हैं।
- जब ध्रुवीय भंवर विस्थापित होता है, तो यह गंभीर सर्दियों के तूफानों को जन्म दे सकता है, जो कि तापमान, बर्फ और बर्फ के जमाव की विशेषता रखते हैं। ये तूफान अक्सर दैनिक जीवन को बाधित करते हैं, जिससे यातायात दुर्घटनाएँ, बिजली की कटौती और स्कूल और व्यवसाय बंद हो जाते हैं। वे उन लोगों के लिए खतरनाक स्थिति भी पैदा कर सकते हैं जो लंबे समय तक ठंड के संपर्क में रहते हैं, जिससे हाइपोथर्मिया और शीतदंश का खतरा बढ़ जाता है।

क्या जलवायु परिवर्तन ध्रुवीय भंवर को प्रभावित कर रहा है?

- जलवायु परिवर्तन और ध्रुवीय भंवर के व्यवहार के बीच संबंध सक्रिय शोध का एक क्षेत्र है। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्लोबल वार्मिंग, विशेष रूप से आर्कटिक में, ध्रुवीय भंवर की ताकत और स्थिरता को प्रभावित कर सकती है।
- हाल के वर्षों में, शोधकर्ताओं ने देखा है कि आर्कटिक दुनिया के अन्य हिस्सों की तुलना में अधिक तेज गति से गर्म हो रहा है – एक घटना जिसे आर्कटिक प्रवर्धन (Arctic Amplification) के रूप में जाना जाता है। जैसे-जैसे आर्कटिक तेजी से गर्म होता है, ध्रुवों और निचले अक्षांशों के बीच तापमान का अंतर कम होता जाता है, जिससे ध्रुवीय भंवर कमजोर होता जाता है और यह विघटन के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है।

बीजापुर माओवादी हमला

संदर्भ: हाल ही में छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में माओवादियों ने एक पुलिस वाहन पर हमला किया, जिसमें जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) के नौ जवान शहीद हो गए। यह हमला इस बात पर प्रकाश डालता है कि मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) में चूक कैसे गंभीर परिणामों को जन्म दे सकती है।

माओवादी क्षेत्रों में एसओपी के बारे में:

मध्य भारत के जंगलों में, जहां माओवादी गुरिल्ला युद्ध की रणनीतियां फलती-फूलती हैं, सुरक्षा बल हताहतों को कम करने के लिए सख्त एसओपी का पालन करते हैं। इनमें शामिल हैं:

- **वाहनों की आवाजाही से बचें:** वाहनों के उपयोग को कम से कम करें और सुरक्षा हेतु नागरिक वाहनों को प्राथमिकता दें।
- **अप्रत्याशित बदलाव:** माओवादियों द्वारा ट्रैक किए जाने से रोकने के लिए मार्ग और समय बदलना।
- **क्रॉस-कंट्री मूवमेंट:** पता न चलने के लिए पैदल या बाइक गश्त का उपयोग करना।
- **निवारक उपाय:** आईईडी का पता लगाने के लिए रोड ओपनिंग पार्टियां (आरओपी) का प्रयोग करना।
- **स्थानीय खुफिया और ड्रोन:** माओवादी गतिविधियों को ट्रैक करने के लिए स्थानीय मुखबिरों और हवाई निगरानी का उपयोग करना।

माओवादी कैसे हमले की तैयारी करते हैं?

- माओवादी भू-भाग और स्थानीय नेटवर्क की अपनी गहरी समझ का उपयोग करके महीनों पहले आईईडी लगाते हैं। बीजापुर हमले में, माओवादियों को काफिले की आवाजाही का पूर्व ज्ञान था और आरओपी किए जाने के बावजूद उन्होंने पहले ही आईईडी लगा दिया था।

भारत में नक्सलवाद के बारे में:

- नक्सलवाद, जिसे वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) के रूप में भी जाना जाता है, भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। नक्सलवाद से प्रभावित क्षेत्रों को अक्सर 'लाल गलियारा' कहा जाता है, जो मुख्य रूप से विभिन्न राज्यों में आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं।

नक्सलवाद के कारण:

- नक्सली हिंसक साधनों के माध्यम से भारतीय राज्य को समाप्त करना चाहते हैं, चुनाव जैसे लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को खारिज करते हैं। वे क्रांति की वकालत करते हैं, जोकि माओवाद में निहित विचारधाराओं

से प्रेरित है। यह नयी व्यवस्था को स्थापित करने के लिए हिंसक उथल-पुथल का आह्वान करता है।

नक्सलवाद की उत्पत्ति:

- यह आंदोलन 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव में स्थानीय जमींदारों के खिलाफ आदिवासी-किसान विद्रोह के साथ शुरू हुआ। चारु मजूमदार, कनु सान्याल और जंगल संथाल जैसे नेताओं ने विद्रोह का नेतृत्व किया, जिसने नक्सलवादी आंदोलन का जन्म दिया।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी):

- 2004 में, दो प्रमुख नक्सल समूहों, माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर ऑफ इंडिया (एमसीसीआई) और पीपुल्स वार, ने मिलकर सीपीआई (माओवादी) का गठन किया। 2008 तक, अधिकांश अन्य नक्सलवादी समूह सीपीआई (माओवादी) में शामिल हो गए थे, जिससे यह प्रमुख संगठन बन गया। सीपीआई (माओवादी) और उसके सहयोगियों को गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, 1967 के तहत आतंकवादी संगठन घोषित किया गया है।

नक्सलवाद की भौगोलिक पहुंच:

- सबसे अधिक प्रभावित राज्यों में छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और बिहार शामिल हैं। पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश आंशिक रूप से प्रभावित हैं, जबकि उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में इसका कम प्रभाव है। माओवादी दक्षिणी राज्यों केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में भी विस्तार करने का प्रयास कर रहे हैं, जिसमें पश्चिमी और पूर्वी घाट को जोड़ने की योजना है। इसके अतिरिक्त, असम और अरुणाचल प्रदेश में घुसपैठ को लेकर चिंता बढ़ रही है।

भारत और अफगानिस्तान के बीच पहली उच्च-स्तरीय राजनयिक वार्ता

संदर्भ: हाल ही में भारत और तालिबान ने 2021 में तालिबान द्वारा अफगानिस्तान पर नियंत्रण स्थापित करने के बाद अपनी पहली उच्च-स्तरीय राजनयिक वार्ता आयोजित की। विदेश सचिव विक्रम मिश्री ने दुबई में अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी से मुलाकात की। वार्ता में सुरक्षा, मानवीय सहायता और ईरान के चाबहार बंदरगाह के माध्यम से व्यापार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

बैठक में किन मुद्दों पर चर्चा हुई?

- **सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** भारत ने अफगानिस्तान से भारत-विरोधी आतंकवादी गतिविधियों के बारे में चिंता व्यक्त की। तालिबान ने भारत को आश्वासन दिया कि वह इन सुरक्षा खतरों का समाधान करेगा।
- **मानवीय सहायता:** भारत ने खाद्य, दवाइयाँ और टीके सहित आवश्यक सहायता प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। अफगान पक्ष ने भारत द्वारा किए गए पिछले शिपमेंट्स, जिनमें गेहूं और भूकंप राहत सामग्री शामिल थी, की सराहना की।
- **विकास परियोजनाएं:** दोनों पक्षों ने अफगानिस्तान की तत्काल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भविष्य की विकास परियोजनाओं में भारत की भागीदारी पर चर्चा की।
- **चाबहार बंदरगाह के माध्यम से व्यापार:** क्षेत्रीय संपर्क के लिए ईरान के चाबहार बंदरगाह के उपयोग को एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में रेखांकित किया गया। भारत को इस बंदरगाह पर अमेरिकी प्रतिबंधों से छूट दी गई है, जिससे अफगानिस्तान के साथ व्यापार को सुगम बनाया जा सकता है।
- **खेल सहयोग:** चर्चा में क्रिकेट संबंधों को मजबूत करने पर भी ध्यान दिया गया, जिसमें भारत द्वारा अफगान क्रिकेटरों को प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान करके समर्थन किया गया।

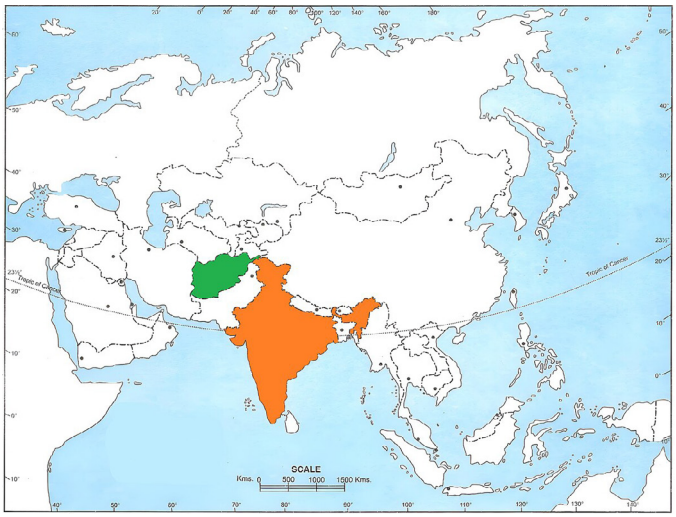

अफगानिस्तान के लिए भारत क्या कर रहा है?

भारत मानवीय सहायता और विकास पहलों के माध्यम से अफगानिस्तान की सहायता में सक्रिय रूप से शामिल रहा है:

- **मानवीय सहायता:** भारत ने गेहूं, दवाइयाँ और शीतकालीन वस्त्र जैसे आवश्यक आपूर्तियाँ भेजी हैं।
- **स्वास्थ्य क्षेत्र में समर्थन:** भारत स्वास्थ्य क्षेत्र में और सहायता प्रदान करने की योजना बना रहा है, जिसमें चिकित्सा संसाधन भी शामिल हैं।
- **शरणार्थियों का पुनर्वास:** भारत विशेष रूप से पाकिस्तान से लौटने वाले अफगान शरणार्थियों के पुनर्वास में सहायता कर रहा है।
- **विकास पहल:** भारत अफगानिस्तान में दीर्घकालिक विकास परियोजनाओं में शामिल होने की संभावना तलाश रहा है।

ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

11 January 2025

अफगानिस्तान का भारत के लिए महत्व :

अफगानिस्तान विभिन्न कारणों से भारत के लिए महत्वपूर्ण है:

- **भू-राजनीतिक विचार:** पाकिस्तान, ईरान और मध्य एशिया की सीमा से लगे अफगानिस्तान का स्थान भारत की सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी रणनीति के लिए महत्वपूर्ण है।
- **व्यापार और संपर्क:** चाबहार बंदरगाह का उपयोग भारत द्वारा अफगानिस्तान और मध्य एशिया के साथ व्यापार संबंधों को बढ़ाता है।
- **जन-जन संबंध (People-To-People Ties):** भारत और अफगानिस्तान के बीच गहरे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध हैं, जो क्षेत्र में भारत के प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण हैं।

भारत के सामने चुनौतियाँ:

तालिबान के नेतृत्व वाले अफगानिस्तान के साथ व्यवहार करने में भारत के सामने कई चुनौतियाँ हैं:

- **सुरक्षा जोखिम:** यह सुनिश्चित करना कि अफगानिस्तान भारत-विरोधी आतंकवादी समूहों का गढ़ न बने, भारत के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय है।
- **राजनीतिक संवेदनशीलताएं:** मानवाधिकारों, विशेष रूप से महिलाओं और अल्पसंख्यकों के संबंध में चिंताओं को देखते हुए, भारत चिंतित है।
- **क्षेत्रीय गतिशीलता:** तालिबान के साथ जुड़ते हुए भारत को पाकिस्तान और ईरान जैसे पड़ोसी देशों के साथ जटिल संबंधों को नेविगेट करना होगा।
- **प्रतिबंधों का जोखिम:** हालांकि भारत को चाबहार पर अमेरिकी प्रतिबंधों से छूट दी गई है, लेकिन विशेष रूप से बदलते अमेरिकी राजनीतिक परिदृश्य के साथ, भविष्य में प्रतिबंधों का जोखिम अभी भी मौजूद है।

पॉवर पैक्ड न्यूज

दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था भारत

- संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, भारत ने 6.6% की अनुमानित वृद्धि दर के साथ दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था का स्थान बरकरार रखा है। संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक आर्थिक निगरानी प्रमुख हामिद रशीद ने बताया कि भारत की अर्थव्यवस्था अगले वर्ष 6.8% की दर से और तेजी से बढ़ सकती है।
- संयुक्त राष्ट्र की 'वश्व आर्थिक स्थिति और संभावनाएं 2025' रिपोर्ट के अनुसार, भारत की अर्थव्यवस्था को सेवाओं और निर्यात वृद्धि, विशेष रूप से फार्मास्यूटिकल्स और इलेक्ट्रॉनिक्स से बल मिलेगा।
- वैश्विक वृद्धि 2.8% पर स्थिर रही है, जबकि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में यह 1.6% रह गई। चीन की विकास दर 4.8% रहने का अनुमान है, जो अगले वर्ष 4.5% हो सकती है। अमेरिका की वृद्धि 1.9% अनुमानित है, जो पिछले वर्ष से कम है।

लियोनेल मेसी को प्रेसिडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडम

- लियोनेल मेसी श्प्रेसिडेंशियल मेडल ऑफ फ्रीडमश पाने वाले पहले पुरुष फुटबॉलर बने। यह सम्मान अमेरिका की समृद्धि, मूल्यों और विश्व शांति में योगदान के लिए दिया जाता है।
- अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन ने उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया। मेसी, मेगन रापिनो के बाद यह पदक जीतने वाले दूसरे खिलाड़ी हैं।
- उन्होंने 2023 में बैलन डीश्ओर और फीफा पुरुष सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार भी जीता था। जुलाई 2023 में वे पेरिस सेंट-जर्मेन से इंटर मियामी में शामिल हुए थे।

तुहिन कांता पांडे बने राजस्व सचिव

- तुहिन कांता पांडे ने अरुणीश चावला की जगह राजस्व सचिव का पद संभाला। चावला को निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग (DIPAM) का सचिव बनाया गया है।
- पिछले वर्ष सितम्बर में ओडिशा कैडर के 1987 बैच के आईएएस अधिकारी श्री पांडे को वित्त सचिव नियुक्त किया गया था। वित्त मंत्रालय में सबसे वरिष्ठ सचिव को वित्त सचिव नियुक्त किया जाता है। पांडे 2016 से वित्त मंत्रालय से जुड़े हैं।
- वित्त मंत्रालय में छह विभाग हैं - राजस्व, आर्थिक मामले, व्यय, वित्तीय सेवाएं, दीपम और डीपीई - और मंत्रालय में सबसे वरिष्ठ नौकरशाह को वित्त सचिव के रूप में नामित किया गया है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
@yeyaias.com

बीमा सखी योजना: गोवा की नई पहल

- गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने 'बीमा सखी योजना' शुरू की, जिसका उद्देश्य सभी के लिए बीमा सेवाएं सुलभ बनाना है।
- यह योजना भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) के साथ मिलकर शुरू की गई है और मुख्य रूप से 18 से 70 वर्ष की महिलाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित है।
- इस योजना के तहत, दसवीं कक्षा उत्तीर्ण महिलाएं वित्तीय साक्षरता और बीमा जागरूकता में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करेंगी। पहले तीन वर्षों तक उन्हें वजीफा भी दिया जाएगा।
- प्रशिक्षित महिलाएं बीमा एजेंट के रूप में कार्य कर सकेंगी और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली बीमा सखियों को एलआईसी में विकास अधिकारी बनने का अवसर मिलेगा।
- इस पहल का उद्देश्य महिलाओं के रोजगार और आय के स्रोतों में वृद्धि करना है। हरियाणा के बाद गोवा ऐसा दूसरा राज्य है जिसने यह योजना लागू की है।

मराठी भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा

- 8 जनवरी 2025 को जारी सरकारी आदेश के बाद मराठी भाषा को औपचारिक रूप से शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।
- केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने महाराष्ट्र के मराठी भाषा मंत्री उदय सामंत को यह आदेश सौंपा। हालांकि 3 अक्टूबर 2024 को मराठी को अन्य भाषाओं के साथ यह दर्जा देने का निर्णय लिया गया था, लेकिन इसकी आधिकारिक अधिसूचना अब जारी हुई।
- महाराष्ट्र सरकार द्वारा केंद्र को मराठी भाषा के शास्त्रीय भाषाओं के लाभ सुनिश्चित करने संबंधी प्रस्ताव भेजा जाएगा।
- तमिल 2004 में पहली शास्त्रीय भाषा बनी थी, संस्कृत को 2005 में यह दर्जा मिला था।

पी. जयचंद्रन का निधन

- दक्षिण भारतीय फिल्म संगीत के प्रसिद्ध गायक पी. जयचंद्रन का 9 जनवरी 2025 को त्रिस्सूर, केरल में निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे।
- उन्होंने मलयालम, तमिल, तेलुगु, हिंदी, और कन्नड़ सहित कई भाषाओं में 16,000 से अधिक गाने गाए। उन्हें भाव गायकन के नाम से भी जाना जाता था।
- जयचंद्रन को सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, केरल राज्य फिल्म पुरस्कार, तमिलनाडु सरकार का कलैमामणि पुरस्कार और जे. सी. डैनियल पुरस्कार सहित कई सम्मान प्राप्त हुए।
- उनकी आवाज मलयालम फिल्म उद्योग में सबसे अधिक पहचानी जाने वाली आवाजों में से एक थी।